संख्या-380/2017/1806/22-2-2016-17(101)/2011

प्रेषक,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर,
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 ***लखनऊ: दिनांक 01 जून, 2017***

विषय:- जिला कारागार, अलीगढ़ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी मुनेश पाल सिंह पुत्र श्री महेन्द्र पाल सिंह, निवासी-जनपद-अलीगढ़ की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक अपने पत्र संख्या-34860/प्रोबेशन-3/(एम-06-09-2016) दिनांक-26-09-2016 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- आपके उक्त पत्र द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार जिला कारागार, अलीगढ़ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी मुनेश पाल सिंह पुत्र श्री महेन्द्र पाल सिंह, निवासी-ग्राम-ल्हौसरा, थाना-लोधा, जनपद-अलीगढ़ का रहने वाला है। दोनों पक्षों के मध्य चल रही पार्टी बन्दी के कारण बन्दी ने 05 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर दिनांक 08.05.1984 को दोपहर 01:30 बजे 03 व्यक्तियों की तमन्चों से गोली मारकर हत्या कर दी तथा 02 पुलिस कर्मियों व मृतकों की मां को घायल किया। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-277/1985 में भा0द0वि0 की धारा-302/149, 307/149, 148 के अन्तर्गत मा0 प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश, अलीगढ़ के आदेश दिनांक 14.06.1991 द्वारा दोषमुक्त किया गया। उक्त के विरूद्ध राज्य सरकार द्वारा मा0 उच्च न्यायालय में शासकीय अपील सं0-1768/1991 योजित की गयी। उक्त अपील में मा0 उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश दिनांक 14.01.1997 द्वारा बन्दी को उक्त धाराओं के अन्तर्गत आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया। बन्दी के 03 सहअभियुक्तों की मृत्यु हो चुकी है, 01 सहअभियुक्त कारागार में निरूद्ध है तथा 01 सहअभियुक्त बाल अपचारी सजा काट कर मुक्त हो चुका है। बन्दी द्वारा दिनांक 15.08.2016 तक 19 वर्ष 10 माह 08 दिन की अपरिहार सजा तथा 25 वर्ष 10 माह 04 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है प्रोबेशन बोर्ड की आख्या में उल्लेख किया गया है कि बन्दी ने 05 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर दिनांक 08.05.1984 को दोपहर 01:30 बजे कचेहरी परिसर में 03 व्यक्तियों की तमन्चों से गोली मारकर हत्या करने तथा 02 पुलिस कर्मियों व मृतकों की मां को घायल करने का जघन्य अपराध कारित किया है। बन्दी का पूर्व आपराधिक इतिहास है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। अत: बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता एवं जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी मुनेश पाल सिंह पुत्र श्री महेन्द्र पाल सिंह को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है तथा सक्षम स्तर पर यह पाया गया कि बन्दी का

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in

01 सहअभियुक्त अभी जेल में है एवं प्रोबेशन बोर्ड द्वारा रिहाई की संस्तुति न करने के दृष्टिगत समयपूर्व रिहाई का औचित्य स्थापित नहीं होता है।

3- उपरोक्त् वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी मुनेश पाल सिंह (बन्दी संख्या-199/15) पुत्र श्री महेन्द्र पाल सिंह निवासी जनपद-अलीगढ़ के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति शासन द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतद्द्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

संख्या-380/2017/1806(1)/22-2-2016 तद्दिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, अलीगढ़।
2- अधीक्षक, जिला कारागार, अलीगढ़।
3- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

शासनादेश सख्या-380/2017/1806/22-2-2016-17(101)/2011

दिनांक 01 जून, 2017 का संलग्नक

<u>सरकार के आदेश</u>

जिला कारागार, अलीगढ़ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी मुनेश पाल सिंह पुत्र श्री महेन्द्र पाल सिंह, निवासी-ग्राम-ल्हौसरा, थाना-लोधा, जनपद-अलीगढ़ का रहने वाला है। दोनों पक्षों के मध्य चल रही पार्टी बन्दी के कारण बन्दी ने 05 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर दिनांक 08.05.1984 को दोपहर 01:30 बजे 03 व्यक्तियों की तमन्चों से गोली मारकर हत्या कर दी तथा 02 पुलिस कर्मियों व मृतकों की मां को घायल किया। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-277/1985 में भा0द0वि0 की धारा-302/149, 307/149, 148 के अन्तर्गत मा0 प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश, अलीगढ़ के आदेश दिनांक 14.06.1991 द्वारा दोषमुक्त किया गया। उक्त के विरूद्ध राज्य सरकार द्वारा मा0 उच्च न्यायालय में शासकीय अपील सं0-1768/1991 योजित की गयी। उक्त अपील में मा0 उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश दिनांक 14.01.1997 द्वारा बन्दी को उक्त धाराओं के अन्तर्गत आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया। बन्दी के 03 सहअभियुक्तों की मृत्यु हो चुकी है, 01 सहअभियुक्त कारागार में निरूद्ध है तथा 01 सहअभियुक्त बाल अपचारी सजा काट कर मुक्त हो चुका है। बन्दी द्वारा दिनांक 15.08.2016 तक 19 वर्ष 10 माह 08 दिन की अपरिहार सजा तथा 25 वर्ष 10 माह 04 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं जिला जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बन्दी की समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है प्रोबेशन बोर्ड की आख्या में उल्लेख किया गया है कि बन्दी ने 05 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर दिनांक 08.05.1984 को दोपहर 01:30 बजे कचेहरी परिसर में 03 व्यक्तियों की तमन्चों से गोली मारकर हत्या करने तथा 02 पुलिस कर्मियों व मृतकों की मां को घायल करने का जघन्य अपराध कारित किया है। बन्दी का पूर्व आपराधिक इतिहास है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। अत: बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता एवं जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी मुनेश पाल सिंह पुत्र श्री महेन्द्र पाल सिंह को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है। तथा सक्षम स्तर पर यह पाया गया कि बन्दी का 01 सहअभियुक्त अभी जेल में है एवं प्रोबेशन बोर्ड द्वारा रिहाई की संस्तुति न करने के दृष्टिगत समयपूर्व रिहाई का औचित्य स्थापित नहीं होता है। उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त शासन द्वारा बन्दी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई अस्वीकार किये जाने का निर्णय लिया गया है।

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in